डॉ. भीमराव अम्बेडकर का पत्रकारीय अवदान
(आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,लखनऊ
से जनसंचार एवं पत्रकारिता विषय में
पीएच.डी. उपाधि
हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

BABASAHEB
BHIMRAO
AMBEDKAR
UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

शोध निर्देशक
डॉ. कुँवर सुरेन्द्र बहादुर
सहायक आचार्य

शोधार्थी
गिरीश शास्त्री
नामांकन संख्या: 603/19

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
मीडिया एवं संचार विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025(उ0प्र0)

2023

शोध सारांश

प्राचीन काल से सभ्यता के विकास के क्रम में मानव समाज अनेक रीति–रिवाजों को मानता आया है। इनमें से अनेक समय के साथ कुरीतियों की श्रेणी में आने लगे। इन कुरीतियों ने सामाजिक परिवेश में अपनी जड़े फैलाना शुरू किया और इतना अधिक विकृत रूप धारण कर लिया कि मानवता ने भी इन कुरीतियों के आगे नतमस्तक होना स्वीकार किया। विश्व की महाशक्तियों में शामिल अमेरिका और रूस भी इससे अछूते नहीं रहे। हालाँकि वहाँ की कुरीतियाँ नस्ल भेद, रंग भेद और शारीरिक विभिन्नता पर आधारित रही। भारत में ये कुरीतियाँ सामाजिक परिवेश में ही विद्यमान रहीं और जातियों तथा उपजातियों की शक्ल में आज भी हमारे समक्ष विद्यमान है। भारतीय समाज में यह परतबद्ध असमानता कई वर्षों से चली आ रही कुरीति है जो मनुष्य–मनुष्य के बीच वैमनस्य पैदा करती है, उन्हें सीढ़ीनुमा सामाजिक परिवेश में ढालकर शोषण, गरीबी और भेदभाव को बढ़ाती है। इन्हीं कुरीतियों और समाज में व्याप्त असमानता एवं भेदभाव की स्थितियों का विरोध कर एक नई वैकल्पिक व्यवस्था की स्थापना करना तथा सामान्य जनमानस को इसके लिए प्रेरित करना एक समाज सुधारक और पत्रकार का ध्येय हाता है। इस कड़ी में ज्योतिबा फुले, राजाराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, महात्मा गाँधी आदि समाज सुधारकों के साथ डॉ. भीमराव अम्बेडकर भी प्रमुख हैं। भारत में समाज सुधार की बात की जाये तो यह 18 वीं सदी में शुरू हो चुका था और 19 वीं सदी तक आते–आते अपना रूप धारण कर चुका था।

डॉ. अम्बेडकर हिन्दू धर्म में व्याप्त जाति व्यवस्था के विरोधी थे। उन्होंने इसके विध्वंस के लिए आंदोलन किये, साहित्य रचा, सम्पूर्ण भारत में सामाजिक जनजागरण के उद्देश्य से घूमे, अधिकारों के लिए लड़े और नया युग, जिसमें समानता और समरसता को जगह दी जाये, का सूत्रपात किया।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध डॉ. अम्बेडकर के पत्रकारीय अवदान पर आधारित है। शोधार्थी ने डॉ. अम्बेडकर के पत्रकारिता क्षेत्र में किये गये प्रयोगों और नवाचारों का अध्ययन शोध के सैद्धान्तिक पक्षों के आधार पर किया है।

प्रथम अध्याय में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन परिचय का अध्ययन है जिससे कि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का ज्ञान हो सके। इस अध्याय में शोधार्थी ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन और शोध की विषयवस्तु से परिचय करवाने के लिए 'अम्बेडकर साहित्य' और विभिन्न स्रोतों की सहायता से विषय को रखने का प्रयास किया है।

बीस के दशक में डॉ. अम्बेडकर अस्पृश्यों की दशा सुधारने और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाने के लिए चिंतन करने लगे। इस संदर्भ में उन्होंने राजनीतिक कार्रवाईयों को अच्छा–ख़ासा महत्व देना शुरू किया। हालांकि तीस के दशक के शुरूआती साल में डॉ. अम्बेडकर समाज सुधार की दिशा में कार्य करते थे परंतु तब तक उन्हें यह समझ आ गया था कि केवल समाज सुधार की दिशा में कार्य करने से ही अस्पृश्यों की दशा नहीं सुधरने वाली है, उन्हें राजनीतिक शक्ति भी मिलनी चाहिए। राजनीतिक संघर्ष के मार्ग पर चलने के बाद डॉ. अम्बेडकर ने 1937 में चुनाव लड़ा। विपक्ष की भूमिका अदा की। वायसराय की काउंसिल में सदस्य रहे। मजदूर के कल्याण के लिए कार्य किया। नेहरू मंत्रिमंडल में मंत्री रहे और बाद में संविधान प्रारूप निर्मात्री समिति के सदस्य रहे। 1951 में मंत्रिमंडल से इस्तीफे के बाद राज्यसभा उपचुनाव 1952 में जीतकर पुनः वे सदन में आये। 1954 के आम चुनावों में उन्होंने लोकसभा का चुनाव लड़ा जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा। इस पूरे समय में वे धर्म के प्रश्न पर विचार करते रहे और बौद्ध धर्म की ओर आकृष्ट हुए। 1956 में धर्म परिवर्तन के साथ ही उन्होंने रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया की स्थापना की नींव भी रखी।

डॉ. अम्बेडकर को किसी भी पद या संपत्ति प्राप्त करने की चेष्टा नहीं थी। उन्हें अगर लालसा थी तो भारत के वंचित वर्ग के हकों की, उनके अधिकारों की। वे भारत में सर्वत्र समानता, भाईचारा और समरसता कायम करना चाहते थे। डॉ.

अम्बेडकर ने सम्पूर्ण जीवन लोकतंत्र में विश्वास बनाये रखा और भारत के पुनरूत्थान के लिये सदैन प्रयत्नशील रहे।

द्वितीय अध्याय में शोध प्रविधि और साहित्य समीक्षा का समावेश है। प्रथम संविधान दिवस के अवसर पर दिनांक 26 नवम्बर 2015 को भारतीय संसद में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर के व्यक्तित्व और कृतित्व के संबंध में निम्न प्रमुख बातें अपने वक्तव्य में कही –

- ''डॉ. अम्बेडकर ने कितनी यातनायें झेलीं, अपमानित हुए, पर उनके हाथ में जब देश के भविष्य का दस्तावेज बनाने का अवसर आया, तो संविधान में कहीं पर भी बदले का भाव नहीं दिखा।

- अगर संविधान बनाने में डॉ. अम्बेडकर शामिल न होते, तो यह शायद सामाजिक दस्तावेज बनने से चूक जाता।

- बाबासाहेब ने सारा जहर पिया और हमारे लिये अमृत छोड़कर गए।''

उक्त कथनों का गहराई से अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने इस शोध के अध्यायीकरण में डॉ. अम्बेडकर की पत्रकारिता के अलावा डॉ. अम्बेडकर के जीवन संघर्ष और डॉ. अम्बेडकर के विचारों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को भी शामिल किया है। इन अध्यायों के माध्यम से शोध में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकारिता के साथ उनके जीवन, संघर्ष और अन्यान्य विचार जो आज भी प्रासंगिक हैं, का ज्ञान होता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने 31 जनवरी, 1920 को "मूकनायक" नामक पाक्षिक पत्रिका को शुरू किया। इस पत्रिका के अग्रलेखों में डॉ. अम्बेडकर ने दलितों की तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं को बड़ी निर्भीकता से उजागर किया। यह पत्रिका उन मूक–दलित, दबे–कुचले लोगों की आवाज बनकर उभरी जो सदियों से उच्च वर्गों तथा सवर्णों का अन्याय और शोषण चुपचाप सहन कर रहे थे।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर विदेश में रहते हुऐ भी शोषितों–वंचितों के लिए बहुत चिंतित रहते थे, उन्होंने लंदन प्रवास में वहाँ के पुस्तकालयों में शोषण, भेदभाव तथा अस्पृश्यता पर उपलब्ध सामग्री का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। विदेश से अपनी शिक्षा पूर्ण करके जब वो वापस भारत आये तो उन्होंने फिर से शोषित–वंचित और निम्न वर्गों के अधिकारों की लड़ाई लड़नी शुरु कर दी। 1927 में उन्होंने 'बहिष्कृत भारत' नामक एक अन्य पत्रिका को शुरू किया। इसमें उन्होंने अपने लेखों के जरिये उच्च वर्गों एवं सवर्णों द्वारा किये जाने वाले अमानवीय व्यवहार का कड़ा प्रतिकार किया और लोगों को अन्याय का विरोध करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. अम्बेडकर ने 'जनता' तथा 'प्रबुद्ध भारत' नामक पत्रिकाओं में भी सामाजिक जनजागरण हेतु लेखन एवं सम्पादन का कार्य किया।

शोध उद्देश्य

1. डॉ. अम्बेडकर द्वारा की गयी पत्रकारिता का समकालीन जनमानस पर प्रभाव एवं परिवर्तन।
2. पत्रकार, समाज सुधारक, गंभीर चिंतक, उद्‌भट शोध लेखक एवं एक संचारक के रूप में उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करना।
3. सामाजिक जनजागरण और राष्ट्रहित में उनके द्वारा लिये गये निर्णयों तथा अन्यान्य लेखों का अध्ययन करना।
4. डॉ. अम्बेडकर द्वारा पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक समरसता और अन्य उद्देश्यों के लिए किये गये अद्वितीय कार्यों का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. डॉ. अम्बेडकर द्वारा की गयी पत्रकारिता का समकालीन जनमानस पर क्या प्रभाव पड़ा ?
2. डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपनी पत्रकारिता में किन विषयों का समावेश किया ?

3. डॉ. भीमराव अम्बेडकर का पत्रकारिता के क्षेत्र में क्या योगदान रहा ?

4. डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकारिता का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में क्या प्रासंगिकता है ?

5. डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समाचार पत्रों और अन्य लेखों का वर्तमान परिदृश्य में क्या महत्व है ?

6. क्या डॉ. अम्बेडकर एक पत्रकार और संपादक के रूप में स्थापित होते हैं ? वे किस प्रकार स्थापित होते हैं एवं पत्रकारिता के इतिहास में उनकी पत्रकारिता की क्या भूमिका है ?

7. पत्रकारिता के बदलते स्वरूप में नैतिक मूल्यों को स्थापित करने हेतु डॉ. अम्बेडकर की पत्रकारिता किस प्रकार प्रेरणादायी हो सकती है ?

प्रस्तुत शोध विषय में मुख्यतः डॉ. भीमराव अम्बेडकर के पत्रकारीय सरोकारों से आये सामाजिक बदलाव को रेखांकित करना और पत्रकारीय सरोकारों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने बहुत से समकालीन मुद्दों पर लेख, भाषण और चर्चा की थी। तथापि यह शोध डॉ. अम्बेडकर के पत्रकारीय सरोकारों और संपादकीयों को केंद्र में रखकर किया गया है। शोधार्थी द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकारिता से संबंधित स्रोतों तथा तथ्यों के संकलन के लिए जो प्रयास किये गये उसमें यह सामने आया कि डॉ. अम्बेडकर के पत्र उपलब्धता के आधार पर कई जगह हैं तथा संरक्षित योग्य हैं। उनको पढ़ सकने और अध्ययन करने की दशा में सभी अंक उपलब्ध भी नहीं है। चूँकि डॉ. अम्बेडकर के पत्र मूल रूप में मराठी भाषा में हैं अतः उपलब्ध अनुवाद को ही शोधार्थी ने अपने शोध का प्राथमिक स्रोत बनाया है।

प्रस्तावित शोध विषय 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर का पत्रकारीय अवदान (आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता)' को मूर्त रूप देने के लिए गुणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। जिसमें शोधार्थी ने ऐतिहासिक शोध विधि तथा प्रश्नावली का प्रयोग किया है। इसके साथ ही प्राप्त तथ्यों को शोधार्थी द्वारा व्याख्यात्मक और

विश्लेषणात्मक प्रक्रिया अपनाकर शोध कार्य किया गया है। शोध को आधार प्रदान करने के लिए निम्न शोध प्रविधियों और शोध उपकरणों का उपयोग किया जाएगा–

- ऐतिहासिक शोध विधि – ऐतिहासिक शोध विधि में डॉ. अम्बेडकर द्वारा संचालित, प्रकाशित समाचार–पत्रों का अध्ययन कर वर्तमान संदर्भ में उसकी उनकी व्याख्या तथा विश्लेषण किया गया है।

- साक्षात्कार – साक्षात्कार के माध्यम से डॉ. भीमराव अम्बेडकर के पत्रकारीय अवदान को समझने का प्रयास किया गया है। साक्षात्कार के लिए डॉ. अम्बेडकर विचार–दर्शन से संबंधित वक्ताओं, शिक्षाविदों एवं शोधार्थियों तक पँहुचने का प्रयास किया गया है।

- अवलोकन विधि – इस विधि के द्वारा डॉ. भीमराव अम्बेडकर के जीवन से संबंधित विभिन्न घटनाक्रमों के स्थलों पर जाकर अध्ययन किया गया है। जिनमें भारत सरकार द्वारा स्थापित 'पंचतीर्थ' में से जन्म भूमि (महु, मध्य प्रदेश), दीक्षा भूमि (नागपुर), चैत्य भूमि (मुंबई) और महापरिनिर्वाण भूमि (नई दिल्ली) प्रमुख हैं। डॉ. अम्बेडकर से संबंधित विभिन्न संग्रहालयों, शोध संस्थानों (अम्बेडकर चेयर एंड अम्बेडकर पीठ) पर जाकर अध्ययन किया गया है।

- प्रश्नावली – शोध का वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता ज्ञात करने तथा न्यू मीडिया के उभरते दौर में डॉ. अम्बेडकर की प्रासंगिकता का अध्ययन करने हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया है। प्रश्नावली के लिए शोधार्थी ने लखनऊ क्षेत्र में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी/शोधार्थी को शोध का क्षेत्र माना है जिसमें बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के विद्यार्थी/शोधार्थी पॉपुलेशन के रूप में रेखांकित किये गये हैं। प्रश्नावली के लिए उद्देश्यपरक सैम्पलिंग का प्रयोग किया गया है जिसमें कुल 500 उत्तरदाताओं को आधार बनाकर अध्ययन किया गया है।

तथ्य संकलन

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध विषय पर अन्वेषण करने पर ज्ञात हुआ कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा की गयी पत्रकारिता के अनुवाद शोधपत्रों और पुस्तकों के रूप में उपलब्ध हैं। शोधार्थी ने डॉ. अम्बेडकर प्रतिष्ठान, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'अम्बेडकर समग्र' (डॉ. अम्बेडकर भाषण और लेखन) को तथा डॉ. अम्बेडकर के मूल मराठी पत्रों के अनुवाद को शोध का प्राथमिक स्रोत बनाया है। इसके अलावा शोधार्थी ने डॉ. अम्बेडकर के समकालीन पत्रों, उनके अनुयायियों, विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों, अम्बेडकर संग्रहालयों आदि से प्राप्त तथ्यों को भी शोध का आधार बनाया है। तथ्य संकलन के लिए शोधार्थी ने प्राथमिक और द्वितीयक डेटा का उपयोग किया है।

- **प्राथमिक डेटा –** इसमें साक्षात्कार, अवलोकन, मूल उपलब्ध मराठी पत्रों के अनुवाद तथा प्रश्नावली से प्राप्त तथ्यों को शोध का आधार बनाया गया है।
- **द्वितीयक डेटा –** इसमें व्यक्तिगत आलेख, सार्वजनिक आलेख, डायरी, संस्मरण, जीवन वृत्त, शोध रिपोर्ट आदि के माध्यम से प्राप्त तथ्यों को शोध में शामिल किया गया है।

तृतीय अध्याय 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर की आरम्भिक पत्रकारिता' में डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा संचालित प्रथम समाचार–पत्र 'मूकनायक' का विश्लेषण किया गया है, जिसमें 'मूकनायक' के प्रकाशित होने से पूर्व की तत्कालीन परिस्थिति, पृष्ठभूमि, ऐतिहासिक दृष्टिकोण और नीति–निर्माण की भी विवेचित किया गया है।

चतूर्थ अध्याय 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समाचार पत्रों का प्रारूप एवं भाषा शैली' में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के लेखों तथा समाचार–पत्रों का अध्ययन करके उनमें प्रयुक्त की गयी भाषाशैली और प्रारूप का विश्लेषण है। इस अध्याय में डॉ. अम्बेडकर द्वारा अपने लेखों में प्रयुक्त किये गये उदाहरणों, मुहावरों, कहावतों, कहानियों, संस्कृत श्लोकों आदि का भी समावेश किया गया है। डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक और धार्मिक बुराईयों के संदर्भ में स्पष्ट और निडर भाषा का प्रयोग किया है। डॉ. अम्बेडकर की कलम विश्लेषणात्मक और रचनात्मक होकर विरोधियों पर बौद्धिक

प्रहार करने में कभी नहीं चूकती। रचनात्मकता के साथ विश्लेषण करना डॉ. अम्बेडकर की कलम की विशेषता रही है।

पंचम् अध्याय 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर का पत्रकार के रूप में उत्कर्ष काल' में डॉ. अम्बेडकर द्वारा प्रकाशित–संचालित समाचार–पत्रों 'बहिष्कृत भारत', 'जनता' और 'प्रबुद्ध भारत' का विश्लेषण और उनका समकालीन समाज पर प्रभाव को रेखांकित किया गया है।

षष्ठम् अध्याय 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों और लेखों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता' में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचारों और लेखों की आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। जिसमें सामाजिक संदर्भ, आर्थिक संदर्भ, राजनीतिक संदर्भ के साथ महिला उत्थान और राष्ट्र निर्माण संबंधी लेखों की प्रासंगिकता को रेखांकित किया गया है। अध्याय में डॉ. अम्बेडकर के विचारों की और न्यू मीडिया के क्षेत्र में क्या प्रासंगिकता है, को भी रेखांकित किया गया है।

सप्तम् अध्याय 'निष्कर्ष' में शोध के सैद्धान्तिक आयामों को आधार बनाकर शोध विषय पर अध्ययन करने पर शोधार्थी को जो निष्कर्ष प्राप्त हुए, वे निम्नलिखित हैं–

- संश्लेषणात्मक ढंग से अध्ययन करने पर शोधार्थी ने पाया कि डॉ. अम्बेडकर द्वारा की गयी पत्रकारिता का समकालीन जनमानस पर अपेक्षाकृत कम प्रभाव हुआ। शोधार्थी शोध में प्राप्त तथ्यों के आधार पर मत प्रकट करता है कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर का एक पत्रकार के रूप में आकर्षक व्यक्तित्व रहा है तथा वे एक उत्कृष्ट पत्रकार के रूप में रेखांकित होते हैं। यहाँ यह उल्लेखित करना आवश्यक है कि समकालीन जनमानस पर अपेक्षाकृत कम प्रभाव और परिवर्तन होने पर भी समकालीन जनमानस ने डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकारिता को महत्व दिया है तथा उनके पत्रकारीय अवदान पर मननशील रहा है।
- शोध में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के पत्रों और प्रकाशित लेखों का अध्ययन किया गया तथा इस अध्ययन के आधार पर शोधार्थी इस मत पर पहुँचा कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक पत्रकार, समाज सुधारक, गंभीर चिंतक और उद्‌भट शोध लेखक रहे हैं। एक संचारक के रूप में उनके व्यक्तित्व को

रेखांकित करने में शोधार्थी ने पाया कि डॉ. अम्बेडकर ने संचारक के रूप में कार्य किया है परन्तु वे एक पेशेवर संचारक के रूप में स्थापित नहीं होकर केवल स्वयं के सिद्धान्तों को लोगों तक पहुँचाने में सफल हुए हैं। डॉ. भीमराव अम्बेडकर की संचार शैली का अध्ययन करने पर शोधार्थी इस तथ्य पर पंहुचा है कि डॉ. अम्बेडकर की संचार शैली वर्ष 1944 में पॉल लेजारसफेल्ड द्वारा प्रतिपादित 'द्विचरणीय प्रवाह सिद्धान्त (टू स्टेप फ्लो थ्यौरी)' के अनुसार रही है। इसे निम्न मॉडल की सहायता से समझा जा सकता है।

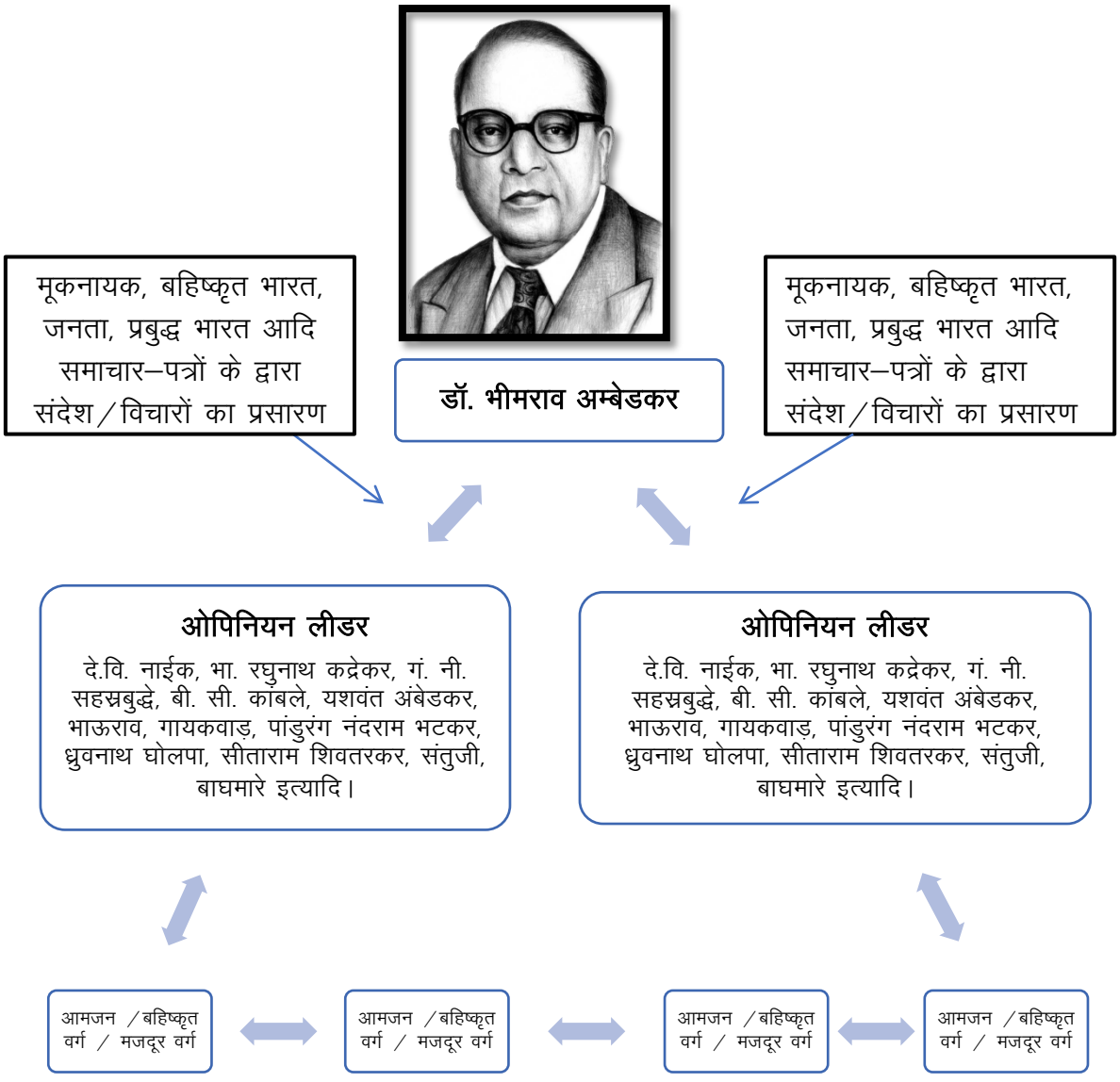

उपर्युक्त मॉडल के माध्यम से यह प्रतिबिम्बित होता है कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर की भाषा, मुद्दे तथा समाज की संकल्पना को ओपिनियन लीडर्स के माध्यम से आमजन तक पहुँचाया गया। डॉ. भीमराव अम्बेडकर को तत्कालीन समाज और अपने श्रोताओं (ऑडियंस) के संदर्भ में यह ज्ञातव्य रहा कि वे अशिक्षित और एकजुट नहीं हैं तथा उनकी आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति अच्छी नहीं है ऐसे में संचार बाधा और भाषा की बाधा स्वाभाविक है अतः उन्होंने इसे दूर करने के उद्देश्य से उपर्युक्त मॉडल के अनुरूप अपनी संचार शैली को क्रियान्वित किया। यह तथ्य डॉ. अम्बेडकर को एक उत्कृष्ट पत्रकार के साथ एक संचारक के रूप में रेखांकित करता है।

शोध से प्राप्त तथ्यों के आधार पर शोधार्थी ने पाया कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सदैव अपने निर्णयों में राष्ट्रहित को प्रथम रखा है। इसके साथ ही अपने प्रत्येक लेख में सामाजिक जनजागरण का लक्ष्य रखकर लिखा और प्रकाशित किया है। डॉ. अम्बेडकर के समाचार–पत्रों में बहिष्कृत भारत पर बढ़ते ऋण के संदर्भ में, महाड़ सत्याग्रह पर क्रमशः सवर्ण वर्ग, अंग्रेज सरकार तथा बहिष्कृत वर्ग की जिम्मेदारियों पर, मजदूरों के अधिकारों पर, महिलाओं की स्थितियों इत्यादि पर लेख लिखें हैं। उक्त लेखों का प्रस्तुत शोध में अध्ययन किया गया है, जो कि अध्याय 02 तथा अध्याय 05 में उल्लेखित है। इसके इतर शोधार्थी ने 'डॉ. भीमराव अम्बेडकर की पत्रकारिता का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में क्या प्रासंगिकता है ?' को लेकर प्रश्नावली द्वारा तथ्य एकत्रित किये हैं जो कि अध्याय 06 में उल्लेखित हैं। उक्त संश्लेषणात्क अध्ययनों के आधार पर शोधार्थी को यह ज्ञात हुआ कि सामाजिक जनजागरण और राष्ट्रहित के मुद्दों पर डॉ. अम्बेडकर सदैव अडिग रहे तथा अपने लक्ष्यों को ध्यान में रखकर निर्णये लेने में सफल सिद्ध हुए हैं।

डॉ. अम्बेडकर के पत्रकारीय अवदान का अध्याय 02 और अध्याय 05 में विस्तृत अध्ययन किया गया है। डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने अपने पत्रकारीय सरोकार में दलित, शोषित, पीड़ित, महिला, मजदूर इत्यादि को केन्द्र में रखा है और इनकी स्थिति, अधिकार आदि का तर्कपूर्ण ढंग से लेखों में समावेश किया है। डॉ.

अम्बेडकर ने मुद्दों और परिस्थितियों को एक तरफा ढंग से न देखकर समग्र और शोभित भाव से देखा और उसे अपनी कलम को समर्पित किया। निश्चित ही प्रस्तुत शोध के अध्यायीकरण और प्राप्त तथ्यों से यह प्रतिबिम्बित होता है कि डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने सामाजिक समरसता और अन्य उद्देश्यों के लिये पत्रकारिता को माध्यम बनाया और इस दिशा में कार्य किया।

पत्रकारिता की बात करने पर हम देखते हैं कि आजादी से पूर्व के समाचार–पत्रों में विभिन्न मूद्दों तथा समाज से जुड़े प्रश्नों की प्रचूरता है और आजादी के बाद के समाचार–पत्रों में दलित अत्याचार, लूट–पाट, बलात्कार, चोरी–डकैती, घपले आदि की ख़बरें अधिक हैं। इन सबके इतर डॉ. भीमराव अम्बेडकर के समाचार–पत्रों में वैचारिकी, संपादकीय लेख और बौद्धिक विचारों की बहुलता है। सीधे तौर पर डॉ. भीमराव अम्बेडकर के पत्रकारीय सरोकारों का समाज जागरण, समरसता भाव और राष्ट्रनिर्माण के संदर्भ में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से संबंध रहा है।

वर्तमान समय में जब भारत में विदेशी पूँजी निवेश की संभावनायें बढ़ रही है, संचार क्रांति अपने नये रूप में स्थापित हो रही है ऐसे में भारतीय पत्रकारिता जगत को अपने नैतिक कर्त्तव्यों के प्रति सदैव चिंतनशील रहना चाहिए तथा स्वतंत्रता–मूलक विचारों को अपनाना चाहिए। इस कार्य में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की संचार शैली, पत्रकारीय सरोकार और नैतिक मूल्यों की अवधारणा का अध्ययन कर उसका अनुशीलन करना बहुत हद तक पत्रकारों तथा पत्रकारिता से जुड़े लोगों को बौद्धिक समृद्धि देने में सहायक सिद्ध होगा।

बाबासाहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर ने करीब चार दशक तक पत्रकारिता के माध्यम से सामाजिक जनजागरण के प्रयास किये। शोधार्थी प्रस्तुत शोध के दौरान भारत के कई छोटे–बड़े मीडिया संस्थानों में गया जिसमें शोधार्थी को यह महसूस हुआ कि वर्तमान समय में भारतीय पत्रकारिता जगत में समरसता का अभाव है जिसके कारण मीडिया संस्थानों में दिन–प्रतिदिन भेदभाव, शोषण आदि के उदाहरण देखने–सुनने को मिलते हैं। डॉ. भीमराव अम्बेडकर के विचार और उनके पत्रकारीय

अवदान का आज के समय में सभी पत्रकारों को अध्ययन करने की आवश्यकता है। जिससे कि पत्रकारिता जगत में नैतिकता को बढ़ावा मिले, मीडिया संस्थानों की कार्यशैली में समरस भाव का प्रादुर्भाव हो तथा साथ ही भारतीय पत्रकारिता का समाधान–परक और राष्ट्रवादी स्वरूप में उत्तरोत्तर विकास संभव हो सके।

प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह प्रतिबिम्बित होता है कि डॉ. अम्बेडकर का पत्रकारीय अवदान व्यापक और विस्तृत है। यह चार दशक तक का समय है जिसमें डॉ. अम्बेडकर पत्रकारिता के माध्यम से जगजागरण और प्रबोधन का कार्य सिद्ध करते हैं। बौद्धिक स्तर, विचार क्रांति और विषय का संश्लेषण उनके लेखों में दिखाई देता है तथापि तत्कालीन समाज पर इसका जो प्रभाव होना चाहिए था वह अपेक्षाकृत कम हुआ। डॉ. अम्बेडकर नैतिक मूल्यों के प्रति सदैव झुके मिलते हैं। जनसामान्य के स्तर पर आकर संवाद स्थापित करने का किंचित अभाव उनके लेखों में प्रतीत होता है। आंदोलनों और राजनीतिक पार्टियों में वे सांगठनिक अनुशासन के प्रबल समर्थक रहे हैं, इस कारण से कई बार उन्हें अकेले कार्य या संचालन करना पड़ा। शोधार्थी ने उक्त निष्कर्षों के अलावा यह भी पाया कि डॉ. अम्बेडकर ने अपने चरित्र और व्यक्तित्व के आधार पर ही पत्रकारीय सरोकारों को रूप प्रदान किया और अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ाए। अवरोधों का सामना करते हुए वे सामाजिक समरसता और सामाजिक न्याय के लिए आगे बढ़ते रहे तथा स्वतंत्रता के बाद भी भारत के प्रथम पंक्ति के महापुरूषों में सर्वोच्च स्थान को सुशोभित किया है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोध के सैद्धान्तिक आधारों पर उपर्युक्त निष्कर्ष प्राप्त किये हैं।